किया जाना चाहिए। सिमैल के अनुसार समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है जिसका उद्देश्य मानवीय सम्बन्धों के स्वरूपों, समाजीकरण के स्वरूपों, सामाजिक संगठन के स्वरूप, वर्गीकरण विश्लेषण और व्याख्या करना है न कि उन स्वरूपों की अंतर्वस्तुओं का, जिसका अध्ययन अन्य विज्ञान करते हैं।

2. **वॉन विज़े (von wiese)** – इन्होंने सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों को 650 प्रकारों में बांटा है और समाजशास्त्र के क्षेत्र को इन्हीं स्वरूपों के अध्ययन से सम्बन्धित माना है। उन्होंने मनुष्य और मनुष्य के बीच के सम्बन्धों को समूह और समूह के बीच के सम्बन्धों से विभिन्न बताया है।

3. **वेबर (Max weber)** के अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। सामाजिक क्रियाएँ वे व्यवहार हैं जो अर्थपूर्ण होते हैं और दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों से प्रभावित होते हैं।

4. वीरकान्त (vierkandt) के अनुसार समाजशास्त्र केवल उन्हीं संबन्धों का अध्ययन करता है, जो सामाजिक व्यवस्था को स्थायी बनाए रखते हैं अथवा सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन उत्पन्न करते हैं। इस अर्थ में समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान है।

स्वरूपात्मक सम्प्रदाय की आलोचना –

सोरोकिन ने निम्नांकित आधार पर इस सम्प्रदाय की आलोचना की है –

1. इस संप्रदाय का मानना है कि सामाजिक संबन्धों के स्वरूपों का अध्ययन दूसरे सामाजिक विज्ञान में नहीं होता। ये कथन गलत है, सामाजिक संबन्धों के स्वरूप (प्रभुत्व, सत्ता, शक्ति, संघर्ष) आदि का अध्ययन कानूनशास्त्र में अधिक किया जाता है।
2. सोरोकिन का कथन है कि यह विश्वास किसी भी तरह से नहीं किया जा सकता कि सामाजिक संस्था (जैसे, विवाह, शिक्षा प्रणाली अथवा कानून) के स्वरूप में परिवर्तन हो जाने पर भी उसकी आंतरिक विशेषताएँ पहले जैसी ही बनी रहती हैं। इस प्रकार स्वरूप और अंतर्वस्तु को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।
3. इस सम्प्रदाय के लोगों ने समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र विज्ञान बनाने का प्रयत्न किया है। यह संदेहपूर्ण है क्योंकि सभी सामाजिक विज्ञान किसी न किसी प्रकार एक दूसरे पर निर्भर हैं।

(II) **समन्वयात्मक सम्प्रदाय (Synthetic school) →**

इस सम्प्रदाय के प्रमुख समर्थक सोरोकिन, दुर्खीम, हाबहाउस और गिन्सबर्ग आदि हैं। इन विद्वानों का कहना है कि समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान नहीं है बल्कि इसका कार्य संपूर्ण समाज की सभी सामान्य विशेषताओं का अध्ययन करना है। इसके लिए इन्होंने दो प्रमुख तर्क दिये हैं! –

1. समाज की विभिन्न इकाइयों के पारस्परिक सम्बन्धों को समझे बिना किसी भी समाज को नहीं समझा जा सकता है क्योंकि समाज के एक भाग में होने वाला परिवर्तन दूसरे भाग को भी प्रभावित करता है। समाजशास्त्र को एक विशेष विज्ञान बना देने से यह कार्य नहीं किया जा सकता।
2. कोई भी ऐसा सामाजिक विज्ञान नहीं है जो संपूर्ण समाज का सामान्य दृष्टिकोण से अध्ययन करता हो। वास्तव में यह कार्य केवल समाजशास्त्र ही कर सकता है।

सोरोकिन के अनुसार – सभी सामाजिक विज्ञान एक-दूसरे पर निर्भर हैं इसलिए किसी भी सामाजिक विज्ञान को स्वतंत्र नहीं माना जा सकता। समाजशास्त्र का यह कार्य है कि वह विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के पारस्परिक सम्बन्धों या उनके सामान्य तत्वों का अध्ययन करे।

दुर्खीम के विचार – दुर्खीम ने समाजशास्त्र को विशिष्ट विज्ञान के माध्यम से सामान्य विज्ञान बनाने पर जोर दिया है। समाजशास्त्र सामूहिक प्रतिनिधानों का विज्ञान है। इसे स्पष्ट करते हुए दुर्खीम ने कहा है कि प्रत्येक समाज में प्रथाओं और परम्पराओं के आधार पर कुछ सामूहिक विचारधाराएँ विकसित हो जाती हैं। कुछ समय के बाद यही विचारधाराएँ या सामूहिक भावनाएँ एक सामूहिक शक्ति का रूप ले लेती हैं। इसी शक्ति को दुर्खीम ने सामूहिक प्रतिनिधान कहा है।

हाबहाउस का कहना है कि – समाजशास्त्र का प्रमुख कार्य विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से प्राप्त परिणामों में से सामान्य तत्वों को ढूंढना है और उनका सामान्यीकरण करना है।

Scanned with CamScanner